ज्ञान के लिए हनुमान जी की ललक

शिव पुराण से ली गई एक कहानी पर आधारित

बहुत समय पहले, किष्किन्धा राज्य के आस-पास, प्राचीन और विशाल वन में एक जनजाति निवास किया करती थी। वे वानर कहलाते थे — ऐसे बुद्धिमान जीव जिनका चेहरा और पूँछ वानरों जैसी थी। महाकाव्य रामायण में वर्णित धर्मयुद्ध में अच्छाई का साथ देने के लिए ब्रह्मदेव ने वानरों की रचना की। भगवान शिव स्वयं सर्वश्रेष्ठ वानर, श्रीहनुमान के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुए, जिन्हें इस युद्ध में एक बहुत-ही महत्त्वपूर्ण भूमिका हेतु नियत किया गया था।

बालपन में ही हनुमान जी को देवताओं से, कई असीमित शक्तियाँ प्राप्त हो गईं थी। उनके संरक्षक, वायुदेव ने हनुमान जी को कहीं भी भ्रमण करने की क्षमता प्रदान की; सृष्टिकर्ता ब्रह्मदेव ने उन्हें इच्छानुसार रूप धारण करने की शक्ति दी; सृष्टिपालक भगवान विष्णु ने उन्हें भक्ति का वरदान दिया। ज्ञान के रक्षक, सूर्यदेव ने वचन दिया कि उचित समय आने पर वे हनुमान जी को ज्ञान प्रदान करेंगे।

दिव्यात्मा होने के कारण हनुमान जी बहुत तेज़ी से बड़े होने लगे। पलक झपकते ही उनका बचपन बीत गया। उनकी माँ, अञ्जना को लगा कि अभी तो हनुमान बालक थे और मानों अगले ही क्षण वे पूर्ण रूप से विकसित हो गए हैं — हाथियों के झुण्ड के समान महाबलिष्ठ और वायु के समान वेगवान।

“हम हनुमान की शिक्षा के लिए क्या करें?” माता अञ्जना ने अपने पति, केसरी से पूछा। “उन्हें वेदों तथा इन पवित्र शास्त्रों का समर्थन करने वाले समस्त विज्ञान को जानने की आवश्यकता है। वे बहुत शीघ्र बड़े हो गए इसलिए उन्हें पाठशाला भेजने का समय ही नहीं मिला!”

पिता केसरी ने सहमति व्यक्त करते हुए कहा, “हाँ, हनुमान अपनी असीमित शक्तियों का, बुद्धिमत्ता और विवेकशीलता के साथ उपयोग करने के लिए तभी तैयार हो सकेगें, जब वे इस शाश्वत ज्ञान को आत्मसात् कर लें।”

“परन्तु उन्हें शिक्षा देने के लिए हम किसे ढूँढ़ें?”

पिता केसरी ने कहा, “जो प्रतिदिन हमें प्रकाश प्रदान करते हैं, उनसे आगे खोजने हमें कहीं नहीं जाना है, याद करो भगवान सूर्यदेव ने, हनुमान को शिक्षा प्रदान करने का वचन दिया था।”

माता अञ्जना ने कहा, “सूर्यदेव हमारे पुत्र के लिए अति उत्तम गुरु होंगे, यद्यपि वे बहुत दूर हैं।” तथापि वे जानती थीं कि उन्हें अपने पुत्र को उनकी उन्नति के लिए घर की सुरक्षा से दूर भेजना ही होगा। अतः माता अञ्जना इस नई योजना के बारे में बताने के लिए बालक हनुमान के पास गईं।

प्रायः नटखट व फुर्तीले हनुमान इस समय झरने के पास, एक बड़ी सी चट्टान पर, गहन विचारों में लीन बैठे थे।

“हनुमान” माता अञ्जना ने कहा, “तुम्हारे पिता और मैं सोच रहे हैं कि तुम्हारी शिक्षा आरम्भ करने का समय आ गया है। अब तुम्हारा शरीर विकसित हो चुका है और यह समय है कि तुम पवित्र शास्त्रों के अध्ययन द्वारा अपने मन को अनुशासित करो।”

“धन्यवाद माता,” बालक हनुमान बोले, “मुझे भी शास्त्रों के ज्ञान की गहन ललक है। मेरे श्रीगुरु कौन होंगे?”

“सूर्यदेवता,” माता अञ्जना ने बड़े सन्तोष के साथ उत्तर दिया। “वे हम सबमें विद्यमान प्रकाश के द्योतक हैं। भगवान सूर्य, परम सत्य के प्रकाश के प्रतीक हैं जिसे हम परम आत्मा के रूप में जानते हैं। कल तुम सूर्य भगवान के पास जाओ और उनसे विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करो कि वे तुम्हें अपने शिष्य के रूप में स्वीकार करें?”

“भगवान सूर्य से शिक्षा प्राप्त करना मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात होगी।” हनुमान जी ने पश्चिम में क्षितिज की ओर देखते हुए कहा, जहाँ सूर्यदेव ने आकाश में लाल, नारंगी और सुनहरे रंग बिखेर दिए थे। “किन्तु मैं वहाँ तक पहुँचूँगा कैसे?”

माँ अञ्जना मुस्कुराईं। “प्रिय हनुमान,” वे बोलीं, “क्या तुम भूल गए हो कि वास्तव में तुम कौन हो?” हनुमान के कन्धे पर हाथ रखते हुए उन्होंने कहा, “तुम एक दिव्यात्मा हो। तुम्हें देवताओं से वरदान प्राप्त हैं।तुममें पवन का वेग है और इच्छानुसार रूप धारण करने की शक्ति है। हनुमान, अगर तुम्हें अपने ऊपर विश्वास है तो तुम कुछ भी प्राप्त कर सकते हो।”

हनुमान जी ने सिर हिलाया और हाथ जोड़कर अस्त होते वैभवशाली सूर्य को प्रणाम किया।

अगले दिन सुबह, अपने दिव्य श्रीगुरु के पास पहुँचने और शिक्षा आरम्भ करने की उत्सुकता के साथ युवा वानर सूर्योदय से पहले उठ गए। हनुमान जी बाहर आकर टहलने लगे, मन्द शीतल वायु बह रही

थी, वे पूर्व की ओर मुख करके खड़े हो गए जहाँ क्षितिज पर हल्की लालिमा छाने लगी थी। उन्होंने सूर्यदेव के पास जाने का संकल्प लिया और एक गहरा श्वास अन्दर लेते हुए अपने शरीर को वन के सबसे ऊँचे वृक्ष से भी ऊँचा, बढ़ा लिया और फिर आकाश में एक छलांग के साथ वे उड़ चले।

हनुमान जी विचारों के वेग से भी अधिक तीव्र गति के साथ, एक चमकीले धुमकेतू के समान उषाकाल के आकाश में उड़ रहे थे। जब पृथ्वी पीछे छूटने लगी तब उन्होंने पीछे मुड़कर देखा तो वे देखकर चकित रह गए। आकाश के अनन्त अन्धकार में पृथ्वी एक दीप्तिमान रत्न के समान लग रही थी।

हनुमान जी पुनः अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने लगे और और कुछ ही क्षणों बाद वे भगवान सूर्य की तेजोमय उपस्थिति में खड़े थे।

सूर्यदेव अपने वैभवशाली प्रकाश-रथ पर सवार हो आकाश मार्ग से यात्रा कर रहे थे। हजारों झिलमिलाते रत्नों से जड़ित यह अद्भुत रथ, सात श्वेत अश्वों द्वारा खींचा जा रहा था। हवा में दौड़ते इन भव्य अश्वों के अयालों से प्रकाश की किरणें स्फुरित हो रही थीं और ये सभी दिशाओं में इन्द्रधनुष बिखेर रही थीं। तथापि, सूर्यदेव के दमकते मुखमण्डल के तेजपुञ्ज के सामने, आस-पास की समस्त ज्योतियाँ फीकी लग रही थीं।

मोहित व विस्मित, हनुमान जी ने अपनी गति भगवान सूर्य के समान कर ली जिससे वे उनके रथ के साथ उड़ सकें।

“हे प्रकाश के देव, ज्ञान के रक्षक, आत्म-प्रकाशित देव, आपको मेरा नमन है” हनुमान जी ने सर झुकाकर और अपने हाथों को हृदय के पास लाकर उन्हें प्रणाम किया। “कृपा कर मुझे अपने शिष्य के रूप में स्वीकार करें और अपने दिव्य प्रज्ञान से मेरी आत्मा को प्रकाशित करें।”

“हनुमान,” सूर्य देवता ने कहा, “मैं तुम्हें पुनः देखकर प्रसन्न हूँ। पिछली बार जब हम मिले थे तब से तुम, विनय व गति की दृष्टि से और अधिक विकसित हो गए हो। तुम्हें अपना शिष्य बनाकर मुझे बहुत खुशी होगी”। वे रुके “किन्तु मैं तुम्हें कैसे पढ़ा सकूँगा? जैसाकि तुम देख सकते हो, मैं कभी नहीं रुकता। मुझे प्राणदायी प्रकाश फैलाते हुए निरन्तर आकाश में घूमते रहना होता है। मैं कभी भी एक स्थान पर ठहर नहीं सकता।”

“प्रिय गुरुदेव, मैं समझ सकता हूँ कि निरन्तर आकाश में घूमते रहना आपका धर्म है और मैं आपके प्राणदायी प्रकाश के लिए हमेशा आपका आभारी रहूँगा। यदि आप मुझे शिक्षा प्रदान करने के लिए

सहमत हैं तो मैं आकाश में आपके साथ-साथ चलता रहूँगा और आप जो भी कहेंगे, उसका एक-एक अमूल्य अक्षर ग्रहण करूँगा।"

भगवान सूर्य मुस्कुराए। "तुम्हारे अन्दर बहुत उत्साह है," वे बोले "और शास्त्र के विद्यार्थी के लिए यह महत्त्वपूर्ण है। यदि तुम वेदों के पवित्र मन्त्रों को सीखना चाहते हो तो तुम्हारे लिए यह आवश्यक है कि जो तुम्हें पढ़ा रहा है तुम्हारा मुख सतत् उसकी ओर ही रहे।"

"फिर मैं विपरीत दिशा में उड़ूँगा," हनुमान जी ने तेज़ी से रथ के सामने एक स्थान पर आकर और अपना मुँह अपने श्रीगुरु की ओर करते हुए कहा। उन्होंने आगे कहा, "मैं आपके अनुसार ही अपनी दिशा रखूँगा और अपना मुँह हमेशा आपके कान्तिमय मुखमण्डल की ओर ही रखूँगा।"

भगवान सूर्य, हनुमान की प्रतिबद्धता व उत्साह से प्रभावित हो गए। "बहुत अच्छा," वे बोले, "फिर, चलो आरम्भ करते हैं।"

सूर्यदेव ने चारों पवित्र वेदों का सम्पूर्ण पाठ, उनके छः व्याख्यात्मक शास्त्रों के साथ किया। एक के बाद एक, हर दिन, पृथ्वी के चारों ओर विपरीत दिशा में प्रदक्षिणा करते और अपने श्रीगुरु की आँखों में देखते हुए हनुमान, एक-एक अमूल्य शब्द अपने अन्दर समाहित करते गए। सूर्य देव के तेजस्वी प्रकाश के अतिरिक्त उन्हें किसी और चीज़ का बोध ही नहीं रहा, और इस तेज ने उन्हें पूर्ण तृप्त कर दिया व उनकी सत्ता के रोम-रोम को पोषित कर दिया। वेदों के स्वर्णिम श्लोक और मन्त्र, विद्यार्थी के अन्तर में परम सत्य के पुष्पों की तरह खिल उठे।

सूर्य देवता ने अपना पाठ पूर्ण कर लेने के बाद अपने विद्यार्थी से कहा कि जो उसने सीखा है वह उसे दोहराएँ। हनुमान जी ने बिना किसी त्रुटि के पाठ किया — चारों वेदों और छहों शास्त्रों के एक-एक मन्त्र, एक-एक श्लोक को दोहराया। केवल एक बार सुनकर ही उन्होंने सब कुछ कंठस्थ कर लिया था।

"तुमने बहुत ध्यान से सुना है," सूर्य देवता ने अपने शिष्य से कहा। "तुमने मेरे एक-एक शब्द को आत्मसात कर लिया है।"

वे रुके। "हनुमान, यह जान लो : यह प्रज्ञान हमेशा से तुम्हारे अन्तर में था। जो मैंने तुम्हें दिया है वह तुम्हारे अपने प्रज्ञान को खोलने की चाबी बना है। अब यह प्रज्ञान तुम्हारे लिए हमेशा सुलभ रहेगा। अब समय आ गया है कि तुम अपने घर लौट जाओ और तुमने जो सीखा है उस सब पर मनन करो।"

कृतज्ञता से भरे, हनुमान जी ने अपने हाथ जोड़े और हृदय के पास लाकर अपने श्रीगुरु को झुककर प्रणाम किया, "हे भगवान सूर्यदेव, जैसे आप हमारे दिन, प्रकाशित करते हैं वैसे ही आपने मेरे हृदय और मेरे मन को आत्मज्ञान के प्रकाश से भर दिया है। अब वापस जाते समय मैं अपनी कृतज्ञता को प्रकट करने हेतु आपकी सेवा में क्या अर्पित कर सकता हूँ?"

"तुम्हारे कृतज्ञतापूर्ण शब्दों के लिए धन्यवाद" सूर्य देवता ने एक मुस्कुराहट के साथ कहा। "मेरे लिए तुम्हारी दृढ़ता और समर्पण ही तुम्हें शिक्षा प्रदान करने का मेरा पुरस्कार हैं।"

हनुमान जी ने एक बार फिर उन्हें प्रणाम किया और पुनः आग्रह किया। "हे भगवान, मैं आपके लिए नहीं, अपने लिए आपको कुछ अर्पित करने हेतु निवेदन करता हूँ। मैं जानता हूँ आपको कुछ नहीं चाहिए। मैं स्वयं अपने लिए पूछ रहा हूँ। आपने मुझे जो दिया है वह इतना अनमोल है कि मुझे लगता है कि इसके बदले में अवश्य ही मुझे कुछ अर्पित करना चाहिए।

अपने शिष्य पर एक बार फिर प्रसन्न होकर भगवान सूर्य ने उनकी ओर विचारपूर्वक दृष्टि डाली। "हनुमान, मैं अवश्य ही तुमसे कुछ माँगूंगा।"

"कृपा कर अवश्य कहें," हनुमान ने कहा और उत्सुकता से सुनने के लिए उनके निकट आ गए। "कृपया आज्ञा दें मैं आपके लिए क्या करूँ।"

"तुम मेरे पुत्र, वानर युवराज सुग्रीव के पास जाओ। उसके साथी और सलाहकार बनो। तुम्हारी इस सेवा से मैं अति प्रसन्न होऊँगा।"

हनुमान जी की आँखों में कृतज्ञता के आँसू भर आए। "मैं प्रसन्नतापूर्वक युवराज सुग्रीव की सेवा करूँगा। मैं जानता हूँ कि उनकी सेवा करके मैं, आपकी इच्छा पूरी करूँगा। धन्यवाद, प्रभु।"

हनुमान जी ने एक बार फिर उन्हें प्रणाम किया और प्रकाश के समान तेज़ गति से जगमगाते नील-ग्रह यानि पृथ्वी की ओर वापस उड़ चले। और इस तरह युवराज सुग्रीव की ओर उनकी यात्रा आरम्भ हुई जिसके कारण वे बाद में भगवान राम से मिले और उनकी महान नियति परिपूर्ण हुई।

श्रीशिवपुराण, भारत का एक पूजनीय शास्त्र है। यह पवित्र कथाओं, दार्शनिक सिखावनियों, स्तुतियों और एक नेक जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन देने वाला विशाल संग्रह है। यह माना जाता है कि इसके आरम्भिक संस्करण, छठी शताब्दी ईसा बाद के आस-पास संकलित कर लिखे गए हैं। यद्यपि इसमें दी गई कहानियाँ कई हजारों वर्ष पहले की घटनाओं का वर्णन करती हैं।

रश्मि स्मिथ द्वारा पुनःकथित

पीटर नीडल द्वारा चित्रित

डिज़ाइन : आरुश कास्तनेदा

© २०१८ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।